
AVYAKT MURLI

22 / 11 / 72

22-11-72 ओम शान्ति अव्यक्त बापदादा मधुबन

अंतिम सर्विस का अंतिम स्वरूप

अपने अंतिम स्वरूप का साक्षात्कार होता रहता है? क्योंकि जितना- जितना नज़दीक आते जाते हैं उतना ऐसे अनुभव होगा, जैसे कोई सम्मुख वस्तु दिखाई दे रही है। ऐसे ही अनुभव होगा कि अभी-अभी यह बनेंगे। जैसे वृद्ध अवस्था वालों को यह सदा स्मृति रहती है कि अभी- अभी वृद्ध हूं, अभी-अभी जाकर बच्चा बनूंगा। ऐसे ही अपने अंतिम स्वरूप की स्मृति नहीं लेकिन सम्मुख स्पष्ट रूप से साक्षात्कार होता है-अभी यह हूं, फिर यह बनेंगे? जैसे शुरू में सुनाते थे कि जब मंजिल पर पहुंच जावेंगे तो ऐसे समझेंगे कि कदम रखने की देरी है। एक पांव रख चुके हैं, दूसरा रखना है। बस, इतना अन्तर है। तो ऐसे अपनी अंतिम स्टेज की समीपता का अनुभव होता है? अपरोक्ष स्पष्ट साक्षात्कार होता है? जैसे आइने में अपना रूप स्पष्ट दिखाई देता है, वैसे ही इस नॉलेज के दर्पण में ऐसा ही अपना अंतिम स्वरूप स्पष्ट दिखाई दे-जैसे कोई बहुत अच्छा सुन्दर चोला सामने रखा हो और मालूम हो कि हमको अभी यह धारण करना है तो न चाहते हुये भी जैसा-जैसा समय नजदीक धारण करने का आता रहेगा तो अटेंशन जावेगा क्योंकि सामने दिखाई दे रहा है। ऐसा ही अपना अंतिम स्वरूप सामने दिखाई देता है और उस स्वरूप तरफ अटेंशन जाता है? वह लाइट का स्वरूप कहो वा चोला कहो, लाइट ही लाइट दिखाई पड़ेगी। फरिश्तों का स्वरूप क्या होता है? लाइट। देखने वाले

भी ऐसे अनुभव करेंगे कि यह लाइट के वस्त्रधारी हैं, लाइट ही इन्हों का ताज है, लाइट ही वस्त्र हैं, लाइट ही इन्हों का श्रृंगार है। जहां भी देखेंगे तो लाइट ही देखेंगे। मस्तक के ऊपर देखेंगे तो लाइट का क्राउन दिखाई पड़ेगा। नैनों में भी लाइट की किरणें निकलती हुई दिखाई देंगी। तो ऐसा रूप सामने दिखाई पड़ता है? क्योंकि माइट रूप अर्थात् शक्ति रूप का जो पार्ट चलता है वह प्रसिद्ध किससे होगा? लाइट रूप से कोई भी सामने आये तो एक सेकेण्ड में अशरीरी बन जाये - वह लाइट रूप से ही होगा। ऐसा चलता-फिरता लाइट-हाऊस हो जावेंगे जो किसी को भी यह शरीर दिखाई नहीं पड़ेगा। विनाश के समय पेपर में पास होना है तो सर्व परिस्थितियों का सामना करने के लिये लाइट-हाऊस होना पड़े, चलते-फिरते अपना यह रूप अनुभव होना चाहिए। यह प्रैक्टिस करनी है। शरीर बिल्कुल भूल जाये। अगर कोई काम भी करना है, चलना है, बात करनी है वह भी निमित्त आकारी लाइट का रूप धारण कर करना है। जैसे पार्ट बजाने के समय चोला धारण करते हो, कार्य समाप्त हुआ चोला उतारा। एक सेकेण्ड में धारण करेंगे, एक सेकेण्ड में न्यारे हो जावेंगे। जब यह प्रैक्टिस पक्की हो जावेगी, फिर यह कर्मभोग समाप्त होगा। जैसे इन्जेक्शन लगा कर दर्द को खत्म कर देते हैं। हठयोगी तो शरीर से न्यारा करने का अभ्यास कराते हैं। ऐसे ही यह स्मृति-स्वरूप का इंजेक्शन लगाकर और देह की स्मृति से गायब हो जायें। स्वयं भी अपने को लाइट रूप अनुभव करो तो दूसरे भी वही अनुभव करेंगे। अंतिम सर्विस, अंतिम स्वरूप यही है। इससे सारे कारोबार भी लाइट अर्थात् हल्के होंगे। जो कहावत है ना -- पहाड़ भी राई बन जाती है। ऐसे कोई भी कार्य लाइट रूप बनने से हल्का हो जावेगा, बुद्धि लगाने की भी आवश्यकता नहीं रहेगी। हल्के काम में बुद्धि नहीं लगानी पड़ती है। तो इसी लाइट-स्वरूप की स्थिति में, जो मास्टर जानी-जाननहार वा मास्टर त्रिकालदर्शा के लक्षण हैं, वह आ जाते हैं। करें या न करें -- यह भी सोचना नहीं पड़ेगा। बुद्धि में वही संकल्प होगा जो यथार्थ करना है। उसी अवस्था के बीच कोई भी कर्मभोग की भासना नहीं रहेगी। जैसे इंजेक्शन के नशे में बोलते हैं, हिलते हैं, सभी कुछ करते भी स्मृति नहीं रहती है। कर रहे हैं - यह स्मृति नहीं रहती है, स्वतः ही होता रहता है। वैसे कर्मभोग व कर्म किसी भी प्रकार का चलता रहेगा लेकिन स्मृति नहीं रहेगी। वह अपनी तरफ

आकर्षित नहीं करेगा। ऐसी स्टेज को ही अंतिम स्टेज कहा जाता है। ऐसा अभ्यास होना है। यह स्टेज कितना समीप है? बिल्कुल सम्मुख तक पहुंच गये हैं? जब चाहें तब लाइट रूप हो जावें, जब चाहें तब शरीर में आवें वा जो कुछ करना हो वह करें। सदाकाल वह स्थिति एकरस जब तक रहे तब तक बीच-बीच में कुछ समय तो रहे। फिर ऐसे रहते-रहते सदाकाल हो जावेगी। जैसे साकार में आकार का अनुभव करते थे ना। फर्स्ट में रहते भी फरिश्ते का अनुभव करते थे। ऐसी स्टेज तो आनी है ना। शुरू-शुरू में बहुतों को यह साक्षात्कार होते थे। लाइट ही लाइट दिखाई देती थी। अपने लाइट के क्राउन के भी अनेक बार साक्षात्कार करते थे। जो आदि में सैम्पल था वह अंत में प्रैक्टिकल स्वरूप होगा। संकल्प की सिद्धि का साक्षात्कार होगा। जैसे वाचा से आप डायरेक्शन देती हो ना, वैसे संकल्प से सारे कारोबार चला सकती हो। नीचे पृथ्वी से ऊपर तक डायरेक्शन लेते रहते हैं, तो क्या श्रेष्ठ संकल्प से कारोबार नहीं चल सकती है? साईंस ने कॉपी तो साइलेंस से ही किया है। तो एग्जाम्पल देने अर्थ पहले से ही स्पष्ट रूप में आपके सामने है। कल्प पहले तो आप लोगों ने किया है ना। फिर बोलने की आवश्यकता नहीं। जैसे बोलने में बात को स्पष्ट करते हैं, वैसे ही संकल्प से सारे कारोबार चलें। जितना-जितना अनुभव करते जाते हो, एक दो के समीप आते जाते हो तो संकल्प भी एक-दो से मिलते जाते हैं। लाइट रूप होने से व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ समय समाप्त हो जाने के बाद संकल्प वही उठेगा जो होना है। आपकी बुद्धि में भी वही संकल्प उठेगा और जिसको करना है उनकी बुद्धि में भी वही संकल्प उठेगा कि यही करना है। नवीनता तो यह है ना। यह कारोबार कोई देखे तो समझेंगे इन्हों की कारोबार कहने से नहीं, इशारों से चलती है। नज़र से देखा और समझ गये। सूक्ष्मवतन यहां ही बनना है। ऐसी प्रैक्टिस कराती हो? टीचर्स को यह सिखलाती हो कि अजुन भाषण करना सिखलाती हो? आप लोगों की स्टेज अपनी है। आप लोग वह स्टेज पार कर चुके हैं। नंबरवार तो हैं ना। जैसे भविष्य में ताज, तख्त धारण करके फिर छोड़कर देते जावेंगे ना। तब तो दूसरे लेंगे। यहां भी आप लोग स्टेज को पार करते चलते जावेंगे तब दूसरे उस स्टेज पर आवेंगे। भविष्य की रूपरेखा यहां चलेगी ना। उस स्टेज से ऐसी

लगन लग जावेगी जो उनके बिना जैसे अच्छा ही नहीं लगेगा। न चाहते भी बार-बार उस तरफ चले जावेंगे। अच्छा!

QUIZ QUESTIONS

प्रश्न 1 :- अंतिम स्टेज की समीपता का अनुभव कैसे होता है?

प्रश्न 2 :- फरिश्तों का स्वरूप कैसा दिखाई पड़ता है?

प्रश्न 3 :- विनाश के समय पेपर में पास होने के लिए क्या बनना पड़े? उसके लिए क्या प्रैक्टिस करनी है?

प्रश्न 4 :- अंतिम स्टेज की स्टेज हम ब्राह्मण आत्माओं की कैसी होगी?

प्रश्न 5 :- अंतिम समय, सूक्ष्म वतन स्थूल वतन में ही बनेगा। इसकी निशानियां क्या होंगी?

FILL IN THE BLANKS:-

(अनुभव, सर्विस, सदाकाल, भविष्य, धारण, दूसरे, एकरस, स्वरूप, चोला, त्रिकालदर्शा, लक्षण, समय, नजदीक)

1 जैसे आइने में अपना रूप स्पष्ट दिखाई देता है, वैसे ही इस नॉलेज के दर्पण में ऐसा ही अपना अंतिम स्वरूप स्पष्ट दिखाई दे-जैसे कोई

बहुत अच्छा सुन्दर _____ सामने रखा हो और मालूम हो कि हमको अभी यह धारण करना है तो न चाहते हुये भी जैसा-जैसा _____ धारण करने का आता रहेगा तो अटेंशन जावेगा क्योंकि सामने दिखाई दे रहा है।

2 स्वयं भी अपने को लाइट रूप _____ करो तो दूसरे भी वही अनुभव करेंगे। अंतिम _____, अंतिम _____ यही है।

3 तो इसी लाइट-स्वरूप की स्थिति में, जो मास्टर जानी-जाननहार वा मास्टर _____ के _____ हैं, वह आ जाते हैं।

4 _____ वह स्थिति _____ जब तक रहे तब तक बीच-बीच में कुछ समय तो रहे। फिर ऐसे रहते-रहते सदाकाल हो जावेगी।

5 जैसे _____ में ताज, तख्त _____ करके फिर छोडकर देते जावेंगे ना। तब तो _____ लेंगे।

सही गलत वाक्यो को चिन्हित करे:-

1 :- लाइट रूप से कोई भी सामने आये तो एक सेकेण्ड में अशरीरी बन जाये - वह लाइट रूप से ही होगा।

2 :- ऐसा चलता-फिरता लाइट-हाऊस हो जावेंगे जो सब को यह शरीर दिखाई पड़ेगा।

3 :- ऐसे कोई भी कार्य लाइट रूप बनने से भारी हो जावेगा, बुद्धि लगाने की ही आवश्यकता नहीं रहेगी।

4 :- जैसे साकार में आकार का अनुभव करते थे ना। फर्स्ट में रहते भी फरिश्ते का अनुभव करते थे। ऐसी स्टेज तो आनी है ना

5 :- जैसे वाचा से आप डायरेक्शन देती हो ना, वैसे कर्म से सारे कारोबार चला सकती हो।

QUIZ ANSWERS

प्रश्न 1 :- अंतिम स्टेज की समीपता का अनुभव कैसे होता है?

उत्तर 1 :- अंतिम स्टेज की समीपता के अनुभव कुछ ऐसे होंगे:-

① क्योंकि जितना- जितना नज़दीक आते जाते हैं उतना ऐसे अनुभव होगा, जैसे कोई सम्मुख वस्तु दिखाई दे रही है। ऐसे ही अनुभव होगा कि अभी-अभी यह बनेंगे।

② जैसे वृद्ध अवस्था वालों को यह सदा स्मृति रहती है कि अभी-अभी वृद्ध हूं, अभी-अभी जाकर बच्चा बनूंगा। ऐसे ही अपने अंतिम स्वरूप की स्मृति नहीं लेकिन सम्मुख स्पष्ट रूप से साक्षात्कार होता है -अभी यह हूं, फिर यह बनेंगे?

प्रश्न 2 :- फरिश्तों का स्वरूप कैसा दिखाई पड़ता है?

उत्तर 2 :- फरिश्तों के स्वरूप की व्याख्या बाबा ने ऐसे की है:-

① वह लाइट का स्वरूप कहो वा चोला कहो, लाइट ही लाइट दिखाई पड़ेगी।

② देखने वाले भी ऐसे अनुभव करेंगे कि यह लाइट के वस्त्रधारी हैं, लाइट ही इन्हीं का ताज है, लाइट ही वस्त्र हैं, लाइट ही इन्हीं का श्रृंगार है।

② मस्तक के ऊपर देखेंगे तो लाइट का क्राउन दिखाई पड़ेगा।

③ नैनों में भी लाइट की किरणें निकलती हुई दिखाई देंगी।

**प्रश्न 3 :- विनाश के समय पेपर में पास होने के लिए क्या बनना पड़े?
उसके लिए क्या प्रैक्टिस करनी है?**

उत्तर 3 :- विनाश के समय पेपर में पास होना है तो सर्व परिस्थितियों का सामना करने के लिये लाइट-हाऊस होना पड़े, चलते-फिरते अपना यह रूप अनुभव होना चाहिए।

लाइट-हाऊस बनने के लिए यह प्रैक्टिस करनी है।

① शरीर बिल्कुल भूल जाये।

② अगर कोई काम भी करना है, चलना है, बात करनी है वह भी निमित्त आकारी लाइट का रूप धारण कर करना है।

③ जैसे पार्ट बजाने के समय चोला धारण करते हो, कार्य समाप्त हुआ चोला उतारा। एक सेकेण्ड में धारण करेंगे, एक सेकेण्ड में न्यारे हो जावेंगे। जब यह प्रैक्टिस पक्की हो जावेगी, फिर यह कर्मभोग समाप्त होगा।

प्रश्न 4 :- अंतिम स्टेज की स्टेज हम ब्राह्मण आत्माओं की कैसी होगी?

उत्तर 4 :- निम्नलिखित स्टेज ब्राह्मण आत्माओं की अंतिम स्टेज होगी:-

① करें या न करें -- यह भी सोचना नहीं पड़ेगा। बुद्धि में वही संकल्प होगा जो यथार्थ करना है।

② उसी अवस्था के बीच कोई भी कर्मभोग की भासना नहीं रहेगी। जैसे इंजेक्शन के नशे में बोलते हैं, हिलते हैं, सभी कुछ करते भी स्मृति नहीं रहती है। कर रहे हैं - यह स्मृति नहीं रहती है, स्वतः ही होता रहता है।

③ वैसे कर्मभोग व कर्म किसी भी प्रकार का चलता रहेगा लेकिन स्मृति नहीं रहेगी। वह अपनी तरफ आकर्षित नहीं करेगा। ऐसी स्टेज को ही अंतिम स्टेज कहा जाता है।

प्रश्न 5 :- अंतिम समय, सूक्ष्म वतन स्थूल वतन में ही बनेगा। इसकी निशानियां क्या होंगी?

उत्तर 5 :- अंतिम समय में निम्नलिखित निशानियां सूक्ष्मवतन का अनुभव कराएंगी:-

① जैसे बोलने में बात को स्पष्ट करते हैं, वैसे ही संकल्प से सारे कारोबार चलें। जितना-जितना अनुभव करते जाते हो, एक दो के समीप आते जाते हो तो संकल्प भी एक-दो से मिलते जाते हैं।

② लाइट रूप होने से व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ समय समाप्त हो जाने के बाद संकल्प वही उठेगा जो होना है। आपकी बुद्धि में भी वही संकल्प उठेगा और जिसको करना है उनकी बुद्धि में भी वही संकल्प उठेगा कि यही करना है।

③ यह कारोबार कोई देखे तो समझेंगे इन्हीं की कारोबार कहने से नहीं, इशारों से चलती है। नज़र से देखा और समझ गये। सूक्ष्मवतन यहां ही बनना है।

FILL IN THE BLANKS:-

(अनुभव, सर्विस, सदाकाल, भविष्य, धारण, दूसरे, एकरस, स्वरूप, चोला, त्रिकालदर्शा, लक्षण, समय, नजदीक)

1 जैसे आइने में अपना रूप स्पष्ट दिखाई देता है, वैसे ही इस नॉलेज के दर्पण में ऐसा ही अपना अंतिम स्वरूप स्पष्ट दिखाई दे-जैसे कोई बहुत अच्छा सुन्दर _____ सामने रखा हो और मालूम हो कि हमको अभी यह धारण करना है तो न चाहते हुये भी जैसा-जैसा _____ धारण करने का आता रहेगा तो अटेंशन जावेगा क्योंकि सामने दिखाई दे रहा है।

चोला / समय / नजदीक

2 स्वयं भी अपने को लाइट रूप _____ करो तो दूसरे भी वही अनुभव करेंगे। अंतिम _____, अंतिम _____ यही है।

अनुभव / सर्विस / स्वरूप

3 तो इसी लाइट-स्वरूप की स्थिति में, जो मास्टर जानी-जाननहार वा मास्टर _____ के _____ हैं, वह आ जाते हैं।

त्रिकालदर्शा / लक्षण

4 _____ वह स्थिति _____ जब तक रहे तब तक बीच-बीच में कुछ समय तो रहे। फिर ऐसे रहते-रहते सदाकाल हो जावेगी।

सदाकाल / एकरस

5 जैसे _____ में ताज, तख्त _____ करके फिर छोडकर देते जावेंगे ना। तब तो _____ लेंगे।

भविष्य / धारण / दूसरे

सही गलत वाक्यो को चिन्हित करे:-

1 :- लाइट रूप से कोई भी सामने आये तो एक सेकेण्ड में अशरीरी बन जाये - वह लाइट रूप से ही होगा। 【✓】

2 :- ऐसा चलता-फिरता लाइट-हाऊस हो जावेंगे जो सब को यह शरीर दिखाई पड़ेगा। 【✗】

ऐसा चलता-फिरता लाइट-हाऊस हो जावेंगे जो किसी को भी यह शरीर दिखाई नहीं पड़ेगा।

3 :- ऐसे कोई भी कार्य लाइट रूप बनने से भारी हो जावेगा, बुद्धि लगाने की ही आवश्यकता नहीं रहेगी। 【✖】

ऐसे कोई भी कार्य लाइट रूप बनने से हल्का हो जावेगा, बुद्धि लगाने की भी आवश्यकता नहीं रहेगी।

4 :- जैसे साकार में आकार का अनुभव करते थे ना। फर्स्ट में रहते भी फरिश्ते का अनुभव करते थे। ऐसी स्टेज तो आनी है ना। 【✓】

5 :- जैसे वाचा से आप डायरेक्शन देती हो ना, वैसे कर्म से सारे कारोबार चला सकती हो। 【✖】

जैसे वाचा से आप डायरेक्शन देती हो ना, वैसे संकल्प से सारे कारोबार चला सकती हो।